'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 271 : हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

# समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना

डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड
म. गां. वि. कला, विज्ञान एंव वाणिज्य महाविद्यालय, मनमाड (नासिक)
दूरभाष न. 9420621975

**प्रस्तावना :-**

सृष्टि पंच तत्वों से बनी है और आज पांचों तत्व प्रदूषित हो गए हैं। आज हम निरंतर विकास कर रहे हैं। इसी वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के कारण दुनिया सिमट गई है और यह सितम, यह परदेसियों के पास पहुंचने की होड़ ने अखिल भूमंडल का पर्यावण मटियामेल कर दिया है। कितनी हास्यास्पद बात है कि आज हमें पर्यावरण दिवस मनाना पड़ता है क्योंकि हमें अपनी जिम्मेदारियां समझ में नहीं आती। क्या एक दिन ही पर्यावरण शुद्ध रखकर हम अपने दायित्व से मुक्त हो सकते हैं ? ऐसे में इक्कीसवीं सदी के कवि की बौखलाई, झुंझलाहट कुछ अर्थ रखती है।

समकालीन कवि की निगाह पर्यावरण के प्रति चौकन्नी है इसलिए आज का कवि नयी मिट्टी,नया पानी और मछलियों के कुनबों की बात करता है क्योंकि प्रवाहमान नदी स्वयं भी नित नई होती चलती है और उससे जुड़े पदार्थ भी। जीने के लिए पानी की अनिवार्य आवश्यकता है भले ही कभी सूखा पड़ता है कभी मुसलाधार बारिश होती है दोनों ही स्थितियों में प्राणी मात्र का जीना दूभर हो जाता है। जब आदमी के अस्तित्व का कहीं नामोनिशान नहीं था, भाषा नहीं थी, तब भी धरती के बहुत बड़े हिस्से को पानी में घिरा हुआ था। पानी का अस्तित्व सुने बियाबान इलाकों में भी होता है। सदा है जहा कोई नहीं रहता। आदमी की जरूरत है पानी, उस पानी से आदमी डरता भी है क्योंकि वह आदमी को भिगोने के साथ बहाकर भी बेघर कर सकता है और डुबोकर जान भी ले सकता है। सारी भयानकरता के बावजूद आदमी माती की पहुंच में ही रहना चाहता है ताकि वह उसके काम में उपयोगी हो सके। बिगड़ता पर्यावरण, सूखती ओजोन परत और चारों ओर पानी की किल्लत,गांव में दूरदराज से रोजमर्रा के कामों के लिए पानी ढोते लोगों की लाइन और शहरों में नलों के पानी के लिए हाय तौबा मचाने, लड़ते -झगड़ते लोगों को हुजूम दिखाई देता है। भविष्य में अशुद्ध पानी की संभावना डराती है। शुद्धता के इसी संकट को महसूस करते हुए समाज की सुरक्षा के लिए विभिन्न कंपनियों ने पानी को आज बोतल बंद कर देना प्रारंभ कर किया हुआ है ,जो मृत्यु का कारण है। इसके साथ ही खुशहाल पर्यावरण का खुशनुमा नजारा भी कवि की निगाह से ओझल नहीं होता। मौसम बारिश का है और कवि लिखता है,

"बादल चिट्ठी धरती को है, कितना खुश रंग लिफाफा।
लेकिन बारिश की मेहरबानी तो असल में,
टपकती खपरैल और भी के बिस्तर से पूछे जानी चाहिए।"1

जिनके घर नहीं होते उनके लिए भीगना या बारिश को चुपचाप देखना थोड़ी देर तक तो अच्छा लगता है, लेकिन बरसात का मौसम झेलना तकलीफ देह है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। ताबड़तोड़ विकास की दिशा में बढ़ती 21वीं सदी की सभ्यता चारों तरफ कंक्रीट का जाल बिछाती जा रही है। जंगल के जंगल काटे जा रहे हैं और नदियों के रास्ते बदल गए हैं। नदी जो चल चिल्लाती कल -कल ध्वनि करती ,चांदनी में